प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक विषय पर प्रशिक्षण प्रारम्भ

पंतनगर। 07 जुलाई 2021। विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा एवं समेटी उत्तराखण्ड द्वारा जैविक कृषि के अन्तर्गत फसल एवं सब्जी उत्पादन विषय पर चार दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन वर्चुअल मोड पर किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन के अवसर पर संयुक्त कृषि निदेशक एवं राज्य समन्वयक आतमा देहरादून, डा. दिनेश कुमार ने जैविक कृषि के बारे में बताते हुए कहा कि आने वाले वर्षों में जैविक कृषि और जैविक उर्वरक, जैविक रसायनों का महत्व और बढ़ेगा। उन्होंने यह भी बताया कि जैविक गुणवत्ता नियंत्रण हेतु कुमायूं और गढ़वाल में एक-एक प्रयोगशाला स्थापित की जायेगी। डा. कुमार ने पर्वतीय जिलों से जुड़े प्रतिभागियों से कहा कि अपने जैविक उत्पादों के प्रचार-प्रसार एवं विपणन हेतु सोशल मीडिया का प्रयोग कर सकते हैं। निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी-उत्तराखण्ड, डा. अनिल कुमार शर्मा ने जैविक कृषि सूक्ष्म जीवाणुओं और जैव रसायनों के समन्वयन के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि इनके समन्वित प्रयोग से कृषक उन्नत जैविक खेती कर सकते हैं।

उद्घाटन के अवसर पर प्राध्यापक एवं समन्वयक समेटी, डा. बी.डी. सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया एवं प्रशिक्षण की रूप-रेखा के बारे में बताते हुए कहा कि इस चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तराखण्ड में जैविक कृषि का महत्व एवं सम्भावनाएं, जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक, कम्पोस्ट एवं वर्मी कम्पोस्ट बनाने की विधियां, कृषि में जैव उर्वरक एवं जैव रसायनों का प्रयोग, पर्वतीय क्षेत्रों में जैविक सब्जी उत्पादन से उद्यमिता विकास एवं जैविक कीट रोग प्रबन्धन, जैविक सब्जी उत्पादन हेतु न्यूनतम साझा कार्यक्रम, जैविक फसलों के प्रमाणीकरण की विधियां इत्यादि पर व्याख्यान होंगे। उन्होंने यह भी बताया कि समेटी द्वारा माह जून 2021 में हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम से 265 प्रसार कार्यकर्ता एवं कृषक लाभान्वित हुए। इस अवसर पर कृषक श्री जगमोहन राणा, श्रीमती सीता भट्ट, श्री देवेन्द्र सिहं भण्डारी एवं श्री तरूण साह ने भी अपने विचार प्रकट किये। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग ७० विभागीय अधिकारी एवं कृषक भाग ले रहे हैं, जो उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों से हैं। प्रशिक्षण का संचालन कु. अनीता यादव, कु. ज्योति कनवाल एवं श्री जगदीश चन्द्र बिष्ट द्वारा किया गया।

वर्चुअल मोड पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करते वैज्ञानिक एवं कृषक।